कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षॉर्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नही लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 18-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।164/2018

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(1) स्वामिनो जीवनं सर्वपन्थ ..... मुस्लिमबन्धूनां चिकित्सा कारिता

i) सन्दर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक "स्पन्दना" के "कर्मयोगी स्वामी केशवानन्दः" इति नामक शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक "डॉ. विक्रमजीत" हैं।

ii) प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गद्यांश में स्वामी केशवानन्द के जीवन को सर्वपन्थ सद्भावना का उदाहरण बताते हुए कवि लेखक उनके गुणों तथा कार्यों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि -

iii) हिन्दी अनुवाद ⇒ स्वामी केशवानन्दजी का जीवन सभी सम्प्रदायों में सद्भावना का उदाहरण है। ~~यह~~ क्योंकि यह जाट जाति में पैदा हुए, परन्तु सिक्खों के गुरु नानक देव के पुत्र श्रीचन्द के द्वारा स्थापित उदासीसम्प्रदाय में दीक्षित हुए। गुरु-ग्रन्थ के उत्तम पाठक हुए। ग्यारह वर्ष की साधना से 700 पृष्ठों के सिक्खों के इतिहास का लेखन करवाया। देश विभाजन के समय में हिंसा होने पर घायल मुस्लिम भाइयों का उपचार कराया।

iv) व्याकरणात्मक टिप्पणी ⇒ i) ग्रन्थस्योत्तमः = ग्रन्थस्य + उत्तमः, गुण संधि
ii) सिक्खेतिहासस्य = सिक्ख + इतिहासस्य, गुणसंधि
iii) जातः = जन् + क्त।
iv) पुत्रेण = पुत्र शब्द, तृतीया विभक्ति, एकवचन
v) बन्धूनां = बन्धु शब्द, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन

v) विशेष ⇒ i) उपर्युक्त गद्यांश की भाषा सरल, सरस तथा सुबोध है।
ii) प्रस्तुत गद्यांश में स्वामी केशवानन्दजी के महान कार्यों व

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उनके द्वारा किए गए परोपकार व सभी जातियों में सद्भावना स्थापित करने का उल्लेख किया गया है।

(2) मरू : सुवर्णो न हि ..... न ते हि मृग्याः ॥

i) सन्दर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक "स्पन्दना" के "~~मरूसौन्दर्यम्~~" "मरूसौन्दर्यम्" नामक शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ "पं. विद्याधर शास्त्री" महोदय द्वारा रचित है।

ii) प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पद्यांश में कवि द्वारा स्वर्णमय मरूप्रदेश की सुन्दरता तथा उसकी विभिन्न विशेषताओं का वर्णन करते हुए उसे अत्यंत रमणीय व दर्शनीय बताया गया है।

iii) हिन्दी अनुवाद ⇒ कवि कहते हैं कि सुन्दर वर्ण वाला मरूप्रदेश जिसने निश्चित ही नहीं देखा है, उसने कहीं पर दर्शनीय क्या देखा है? सुमेरू पर्वत के शिखर मरूप्रदेश में जो स्पष्ट रूप से शोभा देते हैं वे सब काली शिलाओं में निश्चित ही नहीं खोजे जा सकते हैं।

iv) व्याकरणात्मक टिप्पणी ⇒ i) येन = यत् (पु.), तृतीया विभक्ति, एकवचन
ii) दृष्टः = दृश् + क्त।
iii) शिलासु = शिला शब्द, सप्तमी विभक्ति, बहुवचन
iv) कृष्णासु शिलासु = कृष्णाशिलासु, सप्तमी तत्पुरुष समासः।
v) मरौ = मरू शब्द, सप्तमी विभक्ति, एकवचनम्।

v) विशेष ⇒ i) प्रस्तुत पद्यांश की भाषा सरल, सरस तथा सुबोध है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

ii) उपर्युक्त पद्यांश में स्वर्णमय मरुप्रदेश की सुन्दरता व विशिष्टता का वर्णन करते हुए उसे दर्शनीय स्थान बताया गया है।

③ एतद्देश्यप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ..... पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।

i) सन्दर्भः ⇒ प्रस्तुतपद्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य "स्पन्दनायाः" "स्वराष्ट्र-गौरवम्" इति शीर्षकपाठाद् उद्धृतः। मूलतः अयं श्लोकः "मनुस्मृतिः" इति नीतिग्रन्थात् सङ्कलितः।

ii) प्रसङ्गः ⇒ अस्मिन् श्लोके नीतिकारः भारतस्य श्रेष्ठजनानां चरित्रस्य प्रशंसां कुर्वन् कथयति यत्-

iii) संस्कृत व्याख्या ⇒ अस्मिन् देशे (भारतदेशे) जनानां विदुषां श्रेष्ठ-जनानां पार्श्वतः विश्वस्य सर्वे मानवाः आत्मनः गुणव्यवहारादीन् शिक्षन्ते स्म। भारतवर्षस्य विद्वद्भ्यः श्रेष्ठजनेभ्यः वा एव सद्गुणान् शिक्षन्ते स्म।

iv) व्याकरणात्मक टिप्पणी ⇒ i) एतद्देश = एतत् + देश, जश्त्व संधिः।
ii) सकाशादग्रजन्मनः = सकाशात् + अग्रजन्मनः, जश्त्व संधिः।
iii) पृथिव्यां = पृथ्वी शब्द (स्त्री.), सप्तमी विभक्तिः, एकवचनम्।
iv) मानवाः = मानव शब्द, प्रथमा विभक्तिः, बहुवचनम्
v) प्रसूतस्य = प्रसूत शब्द, षष्ठी विभक्तिः, एकवचनम्

v) विशेषः ⇒ i) प्रस्तुतपद्यांशस्य भाषा सरला सुबोधा च अस्ति।
ii) अस्मिन् पद्यांशे कविः भारतस्य मनीषां वर्णयति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(५)

i) सन्दर्भः ⇒ प्रस्तुतनाट्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य "स्पन्दनायाः" "जृम्भस्व सिंह। दन्तांस्ते गणयिष्ये" इति शीर्षकपाठाद् उद्धृतः। मूलतः अयं पाठः महाकविकालिदासविरचितस्य "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" इति नाटकस्य सप्तमाङ्कात् सङ्कलितः।

ii) प्रसङ्गः ⇒ अस्मिन् नाट्यांशे बालकसर्वदमनस्य सिंहशिशुना सह क्रीडायाः तपस्वीनीभ्यां सह च वार्तालापस्य वर्णनं वर्तते।

iii) संस्कृत व्याख्या ⇒

बालः = मुखम् उद्घाट्य सिंह। तव दन्तानां गणनां करिष्यामि।

प्रथमा तापसी = चञ्चलः, कथम् अस्माकं सन्ततुल्यानि प्राणिनः तुदसि? ओह, तव क्रोधः वर्धते। मुनिजनेन तव 'सर्वदमन' इति नामकरणम् उचितमेव कृतम्।

द्वितीया तापसी = निश्चयेन इयं सिंही भवन्तम् आक्रमणं करिष्यति चेत् तस्याः शिशुं न त्यजसि।

बालः = (मन्दहासपूर्वकम्) अहो, अहं तु अत्यधिकं भययुक्तमास्ति।
(इति कथयित्वा अधरोष्ठं दर्शयति।)

iv) व्याकरणात्मक-टिप्पणी ⇒ i) दन्तांस्ते = दन्तान् + ते, अनुस्वार (हल्) संधिः।
ii) नोऽपत्य = नः + अपत्य, उत्व विसर्ग संधिः।
iii) धेयोऽसि = धेयः + असि, उत्व विसर्ग संधिः।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

iv) सास्मितम् = स्मितेन सहितम्, अव्ययीभाव समासः

v) इत्यधरं = इति + अधरं, यण् संधिः।

v) विशेषः ⇒ i) प्रस्तुत नाट्यांशस्य भाषा सरला सुबोधा च अस्ति।

ii) अस्मिन् नाट्यांशे बालस्वभावस्य, व्यवहारचञ्चलतां च स्वाभाविकं यथार्थञ्च वर्णनं वर्तते।

(5) i) सर्वदमनस्य मणिबन्धे रक्षाकरण्डकम् आबद्धम् आसीत्।

ii) कस्तूरी मृगाद् जायते।

iii) 'लोकहितं मम करणीयम्' इति गीतस्य रचनाकारः 'डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर' महोदयः अस्ति।

iv) पञ्चतन्त्रस्य रचना 'पं. विष्णु शर्मणा' कृता।

v) अस्माभिः यानि अन्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि।

viii) काव्येषु नाटकं रम्यम् उच्यते।

(6) ततस्तं सर्पो भूत्वा दशति। = ततस्तं कीदृशः भूत्वा दशति?

(7) भवान् सत्यं वदति। = भवान् किं वदति?

(8) भवतः सदा विजय एव भविष्यति। = कस्य सदा विजय एव भविष्यति?

(9) मेघान् गगने अवलोक्य नन्दामि। = मेघान् कुत्र अवलोक्य नन्दामि?

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(10) प्रथम : श्लोक : -

अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥

द्वितीयः श्लोक : -

हिमालयात् समारभ्य यावदिन्दुसरोवरम् ।
तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते ॥

(11) (क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं "परोपकारस्य महत्वम्" आस्ति।

(ख)
i) सर्वे स्वार्थं समीहन्ते ।

ii) गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति ।

iii) नदी स्वजलं स्वयं न पिबति ।

iv) स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम् विद्यते ।

v) परेषाम् उपकारः परोपकारः उच्यते ।

(ग)
i) "वृक्षाः फलानि प्रयच्छन्ति ।" अत्र 'वृक्षाः' इति कर्तृपदं आस्ति।

ii) "स्वार्थाय सर्वेऽपि जीवन्ति ।" अत्र 'सर्वे' इति सर्वनामपदं आस्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

iii) "मातृसमा उपकारिणी का विद्यते ?" अत्र "उपकारिणी" इति विशेषणपदं आस्ति।

iv) "अतः स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम्।" अत्र "जीवनम्" इति विशेष्यपदं आस्ति।

(12) i) महर्षिः = महा + ऋषिः , गुण (अच्) संधिः।

ii) शिवोऽहम् = शिवः + अहम् , उत्व विसर्ग संधिः।

(13) i) गै + अकः = गायकः , अयादि (अच्) संधिः।

ii) शिवस् + च = शिवश्च , चर्त्व (हल्) संधिः।

(14) i) विशालभवनं = विशालं भवनम् इति , कर्मधारय समासः।

ii) भरतशत्रुघ्नौ = भरतश्च शत्रुघ्नश्च , द्वन्द्व समासः।

iii) दिनं दिनं प्रति = प्रतिदिनम् , अव्ययीभाव समासः।

(15) i) जलं विना जीवनं नास्ति।

विभक्तिः ⇒ द्वितीया विभक्तिः।

कारणम् ⇒ "विना" शब्दस्य योगे द्वितीया विभक्तिः भवति। अस्मात् कारणात् "जलं" इति शब्दे द्वितीया विभक्तिः

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अभवत् ।

ii) पार्वती "नमः शिवाय" इति जपम् अकरोत् ।

विभक्तिः ⇒ "नमः" शब्दस्य योग
विभक्तिः ⇒ ~~द्वितीया~~ चतुर्थी विभक्तिः ।

कारणम् ⇒ "नमः" शब्दस्य योगे ~~द्वितीया~~ चतुर्थी विभक्तिः भवति। अस्मात् कारणात् "शिवाय" इति शब्दे चतुर्थी विभक्तिः अभवत् ।

iii) मन्दिरम् उपर्युपरि ध्वजः विद्यते।

विभक्तिः ⇒ द्वितीया विभक्तिः ।

कारणम् ⇒ "उपर्युपरि" शब्दस्य योगे द्वितीया विभक्तिः भवति। अस्मात् कारणात् "मन्दिरम्" इति शब्दे द्वितीया विभक्तिः अभवत् ।

(16) i) श्रीधरः धनी आसीत् । (धन + इनि)

ii) शिक्षिका बालाः पाठं पाठयति । (शिक्षक + टाप्)

(17) i) सा बुद्धिमती अस्ति।

बुद्धिमती = बुद्धिमत् + ङीप् ।
बुद्धि + मतुप् (स्त्री)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ii) शिवस्य पत्नी पार्वती अस्ति।

पार्वती = पार्वत् + ङीप्।

(18) i) अहं i) श्वः देहलीं गमिष्यामि।

ii) तृणानि ii) इतस्ततः विकीर्णानि आसन्।

iii) वयम् iii) अधुनैव कार्यं सम्पादयामः।

(19) जनः ग्रामं गच्छति। = जनेन ग्रामः गम्यते। (कर्मवाच्ये)

(20) भगिन्या वस्त्रं प्रक्षाल्यते। = भगिनी वस्त्रं प्रक्षालयति। (कर्तृवाच्ये)

(21) मया नगरं गम्यते। = अहं नगरं गच्छामि। (कर्तृवाच्ये)

(22) i) महेशः रात्रौ सपादद्दशवादने शयनं करोति।

ii) "शताब्दी" रेलयानं पादोनदशवादने जयपुरात् देहलीं गच्छति।

(23) i) कृषकः प्रातः क्षेत्रस्य प्रतिगच्छति। = कृषकः प्रातः क्षेत्रं प्रतिगच्छति।

ii) हट्टे त्रयः महिलाः वस्तूनि क्रीणन्ति। = हट्टे तिस्रः महिलाः वस्तूनि क्रीणन्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
( )	iii)	अहं रोटिका खादामि। = अहं रोटिकां खादामि।

(२५)

सुनगरम्
18 मार्च 2019

प्रियमित्र ! कवीन्द्र !

कुशली सन् कुशलं कामये। मा. शि. बोर्डपरीक्षा सान्निकटे वर्तते। अहं समयसारिणीं निर्मायि योजनया अधीयानः आस्मि। अधुना मम परिजनाः अपि मम सहयोगे रताः सन्ति। गुरवः सर्वोत्तमान् अङ्कान् प्राप्तुं विद्यालये विशेषकक्षां सञ्चालयन्ति। ममापि लक्ष्यं तदेव वर्तते। भवानपि योजनया एव अधीयानः स्याद्। गतः कालः न पुनरायाति, इति सूक्तिं सर्वदा अपि स्मर।

भवन्मित्रम्
- नरेन्द्रः

(२५) संवादं ⇒

महेशः - निरञ्जन ! i) श्वः रविवासरः, त्वं का योजना वर्तते?

निरञ्जनः - अरे ii) त्वं न जानासि ? रविवासरे सर्वे मिलित्वा वसतेः स्वच्छता करणीयास्ति।

महेशः - अहो ! उत्तमः विचारः ! iii) कदा गम्यते ?

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

निरञ्जनः - प्रातः अष्टवादनाद् iv) ~~आरभ्य~~ वामतः कार्यमिदं भविष्यति ।

महेशः - पूर्वं कस्य भागस्य v) स्वच्छता करिष्यते ?

निरञ्जनः - vi) नालीनां विद्यमानस्य अद्यस्य उद्यानस्य आदौ करिष्यामः ।

महेशः - तेन तद् रमणीयं vii) सुन्दरं च भविष्यति ।

निरञ्जनः - viii) ~~वामतः~~ आरभ्य स्वच्छता योजनायां स्वीकृता एव ।

(26) i) महिला कुए से जल लाती है । = ~~महिला कूपात् जलं आनयति ।~~

ii) तुम भी जाओ । = त्वमपि गच्छ ।

iv) मैं गणित व विज्ञान पढ़ाती हूँ । = अहं गणितं विज्ञानं च पठामि ।

v) मित्र को दूध अच्छा लगता है । = मित्राय दुग्धं रोचते ।

vi) मैं ज्ञानी हूँ । = अहं ज्ञानी अस्मि ।

(27) i) पर्वतस्य i) पृष्टतः ग्रामः अस्ति ।

ii) ग्रामे ii) सुन्दराणि उपवनानि सन्ति ।

iii) मध्ये च भगवतः iii) शिवस्य देवालयोऽस्ति ।

iv) पर्वतं iv) निकषा एका नदी प्रवहति ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

v) ग्रामः जनाः नद्यां v) तरन्ति ।

vi) ग्रामस्य विद्यालयः अतीव मनोहरः अस्ति ।

(२४) कथाक्रमसंयोजनं ⇒

i) नद्याः तटे फलोपेतः जम्बूवृक्षः आसीत् ।

ii) तस्य शाखायां वानरः वसति स्म ।

iii) एकदा एक मकरः नद्यां वसति स्म ।

iv) मकरः वानरेण पतितानि मधुरफलानि आस्वाद्य अचिन्तयत् ।

v) "फलानि अतिमधुराणि" अतः वानर हृदयन्तु अतीव मधुरं स्यात् अतः वानर हृदयं खादामि ।

vi) वानरः मकरस्य प्रयासं बुद्धि चातुर्येण विफलीकृतवान् ।

—*—*— समाप्त —*—*—